गौरी के एलबम में जज्बात और जिंदगी के रंग

संगीत तो जैसे मेरी शिराओं में रचा-बसा है और मुझे विरासत में मिला है। मेरी दादी को ठुमरी-गाने का शौक था तो पिताजी को गजलों का। उनके मुंह से मेंहदी हसन की गजलों को सुनते-सुनते मैं बड़ी हुई हूं। यह कहना गौरी सक्सेना का है। गौरी के गाये गीतों का पहला हिन्दी रीमिक्स पाप एलबम 'चने के खेत में' इस समय बाजार में है। सागरिका म्यूजिक ने हाल में जारी किया यह एलबम नौजवानों को पसंद आ रहा है। गौरी कहती हैं- इस पहले एलबम में उन्होंने ऐसे गीतों को चुना है जिनमें सुनने वालों को कई तरह के जज्बात और जिंदगी के रंग एक साथ ढले हुए मिलेंगे। कैलीफोर्निया अमेरिका में जाकर बस गयी, गौरी ने न्यूयार्क से एमबीए किया है। गौरी बताती हैं कि गाने के शौक के कारण उन्होंने फाइनेंस मैनेजर का जॉब छोड़कर वह पति संदीप के प्रोफेशनल बैण्ड धुन में लीड सिंगर बन गयी हैं। उनका यह बैण्ड गुजरात भूकंप और शंकर आई फाउण्डेशन जैसी संस्थाओं के लिए कई सहायतार्थ शो भी कर चुका है। स्कूल कालेज के दिनों में ही गायकी के लिए कई खिताब जीत चुकी गौरी ने दिल्ली गंधर्व महाविद्यालय में विनयचन्द्र मुद्गल से शास्त्रीय संगीत की तालीम ले चुकी गौरी ने प्रख्यात गायिका सिद्धेश्वरी देवी की पुत्री सविता देवी और इधर शुभांगी साकलकर से ट्रेनिंग ली है।

गौरी बताती हैं कि उन्हें आशा भोसले, लता मंगेशकर, किशोर कुमार और मेंहदी हसन की गायन शैली बहुत पसंद है। शास्त्रीय गायन के साथ ही उनकी रुचि पाप, गजल और लोक संगीत के साथ ही हिन्दी फिल्मी गीत गाने में भी है। उनके इस रीमिक्स एलबम चने के खेत में आईये 'मेहरबां..., ये लो मैं हारी, प्यार दो प्यार लो..., बूझ मेरा क्या नाम रे..., भंवरा बड़ा नादान...,' जैसे गीत हैं। इसका संगीत नामी म्यूजिक अरेंजर जवाहर वट्टल का है। गौरी कहती है- जवाहर जी ने जहां हाथ लगाया है वही चीज खरी बन गयी है। उम्मीद है यह एलबम भी आज के हाट रीमिक्स ट्रेण्ड में अपना खास मुकाम बनाएगा।

– निहारिका